हिमालयी आपदाओं पर पर्माफ्रॉस्ट क्षरण का प्रभाव

स्रोत: द हिंदू

भारत के आर्कटिक अभियान के एक भाग के रूप में **ग्लेशियोलॉजिस्ट**, जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय में आपदा जोखिमों का आकलन करने के लिये पर्माफ्रॉस्ट क्षरण पर शोध कर रहे हैं।

- पर्माफ्रॉस्ट अथवा स्थायी तुषार-भूमि वह भूमि है जो कम-से-कम दो वर्षों तक **32°F (0°C) या इससे नीचे जमी हुई अवस्था में रहती है, यह आमतौर पर उच्च अक्षांश और उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों** में पाई जाती है।
    - पर्माफ्रॉस्ट मृदा, चट्टानों, रेत का मिश्रण है जो वर्ष भर बर्फ से जमी हुई एक परत के रूप में होती है।
- ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप **पर्माफ्रॉस्ट पिघलता** (स्थायी रूप से जमी हुई मृदा या चट्टान का पिघलना) है, जिसके कारण भूस्खलन जैसी घटनाएँ देखने को मिलती है जो बुनियादी ढाँचा को प्रभावित कर सकती हैं।
    - **भारतीय हिमालय में पर्माफ्रॉस्ट और आपदाओं** के बीच संभावित संबंध की जानकारी का आभाव एक महत्त्वपूर्ण अंतर है , जिसमें दक्षिण ल्होनक ग्लेशियल झील **(सिक्किम) के फटने जैसी** हाल की घटनाएं भी शामिल हैं।
    - भारतीय हिमालय में **पर्माफ्रॉस्ट और प्राकृतिक आपदाएँ**, जैसे कि हाल ही में सिक्किम में **दक्षिण ल्होनक ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड**, के बीच संभावित जानकारी के अभाव का परिणाम हैं।
- ग्लेशियोलॉजिस्ट का लक्ष्य आर्कटिक क्षेत्रों में पर्माफ्रॉस्ट का अध्ययन करके **आँकड़ों के अंतराल को कम करना** तथा हिमालयी स्थलाकृति के निष्कर्षों का लाभ उठाना है।
    - इसका लक्ष्य **स्थानीय समुदायों के बीच** पूर्व चेतावनी प्रणालियों और दीर्घकालिक बुनियादी ढाँचे की योजना के लिये जागरूकता उत्पन्न करना है।

//

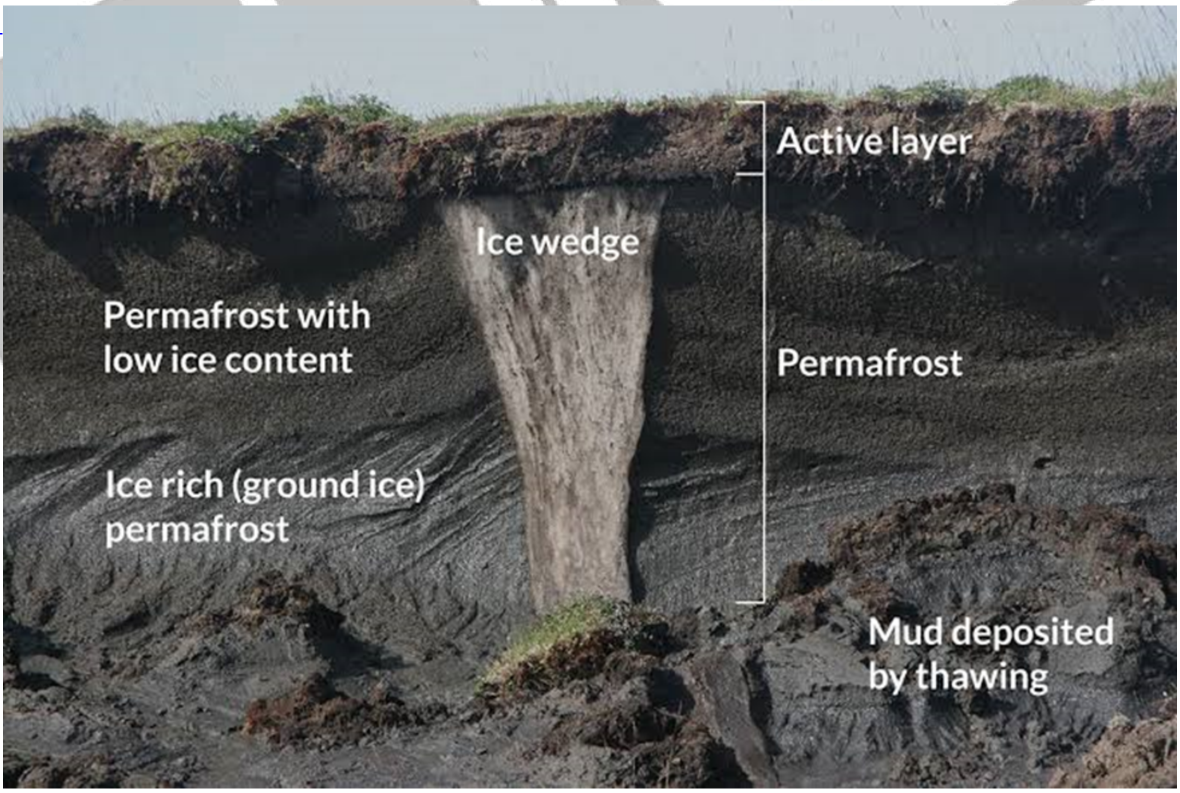

और पढ़ें: आर्कटिक में पर्माफ्रॉस्ट का विगलन और औद्योगिक संदूषण

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/impact-of-permafrost-collapse-on-himalayan-disasters